अध्याय – प्रथम

मेवाड़ रियासत की भौगोलिक एवं राजनैतिक पृष्ठभूमि

1.0 प्राकृतिक क्षेत्र –

भौगोलिक व्यवस्था की दृष्टि से सम्पूर्ण मेवाड़ तीन प्राकृतिक क्षेत्रों में बांटा जा सकता है। 1) पर्वतीय भूमि, 2) पठारीय भूमि, 3) मैदानी भूमि

पर्वतीय भूमि –

अरावली पर्वत के छोटी और बड़ी श्रृंखलाऐं मेवाड़ प्रदेश के सम्पूर्ण क्षेत्रफल में बिखरी हुई है। मुख्यतः इन्हें दो भागों में विभक्त किया जाता है। यह श्रृंखलाऐं राज्य के क्षेत्रफल का 3/4 भाग के लगभग थी।

उत्तर–पश्चिमी अरावली श्रृंखला –

अजमेर की ओर से दीवेर के निकट मेवाड़ में प्रवेश करने वाली श्रृंखला पश्चिम – दक्षिण में मारवाड़ राज्य[1] के किनारे–किनारे रेंगती हुई मेवाड़ की दक्षिणी सीमा तक फैली हुई है। इसी श्रृंखला में अरावली की सर्वोच्च चोटी 'जरगा का पहाड़' स्थित है।[2] श्रेणी के पर्वतों में कई संकरे और तंग प्राकृतिक मार्ग स्थित है। जिन्हें स्थानीय भाषा में 'नाल' कहा जाता रहा है। इन नालों में देसूरी, केलवाड़ा और हाथी गुड़ा की नाल जोधपुर राज्य और मेवाड़ राज्य के मध्य आवागमन के लिए प्रयोग होती रही थी।

इसी भू–भाग से राज्य के केन्द्रिय प्रदेश को उपजाऊ बनाने वाली नदियाँ निकलती है। इस पर्वतीय क्षेत्र में अधिकतर राज्य के आदिवासी भीलों का निवास स्थान रहा है। यह जाति पर्वतीय उपज और कृषि[3] पर अपना जीवन निर्वाह करती आई है।

आलोच्यकाल में इस क्षेत्र का भू–प्रबन्ध खालसा एवं जागीर के प्रशासनांतर्गत था। इस क्षेत्र में उदयपुर, कुम्भलगढ़, सायरा, गोगुन्दा, झाड़ोल इत्यादि स्थान जन–जीवन के प्रमुख प्रशासनिक केन्द्र थे।

MAHARANA MEWAR LIBRARY, UDAIPUR

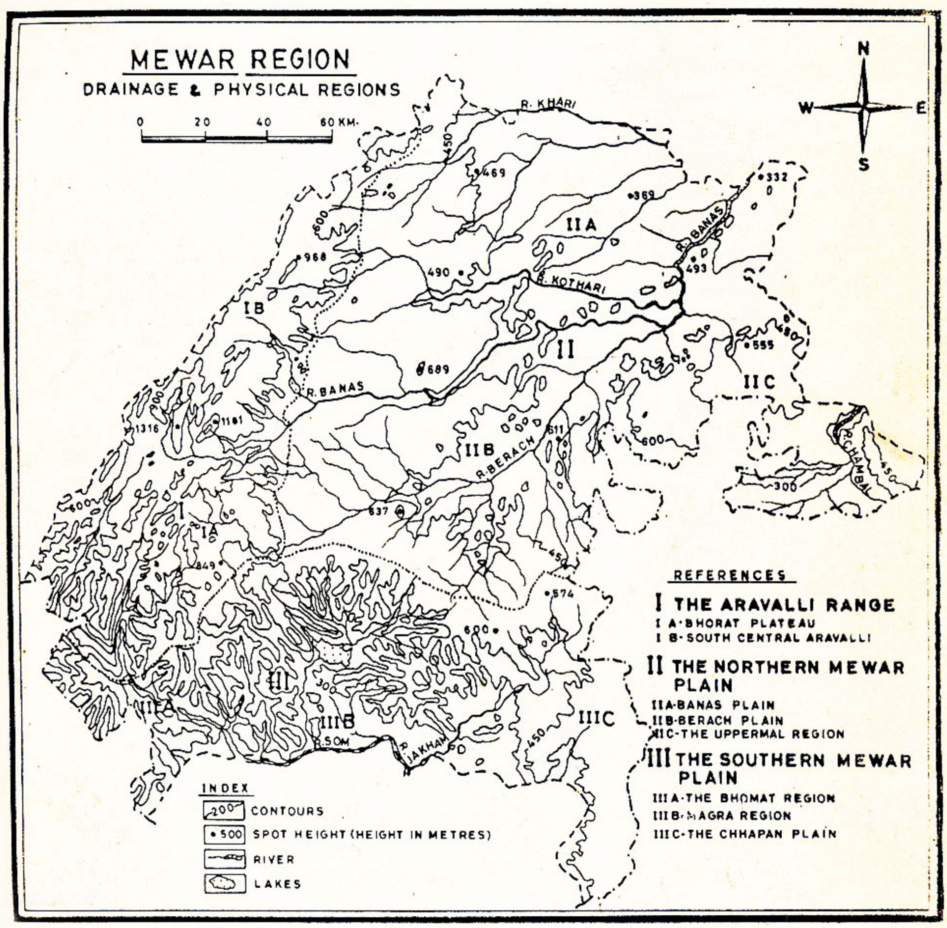

FIG.1.3

दक्षिणी अरावली श्रृंखला –

यह पर्वतीय भाग खान एवं खनिज तथा इमारती काष्ठ की दृष्टि से बहुत सम्पन्न रहा है।[4] इस भाग में राज्य के दक्षिणी भाग की ओर बहने वाली नदियों में गोमती, माही तथा वाकल नदी मुख्य है। यह प्रदेश पुनः मगरा, मेवल तथा छप्पन उपक्षेत्रों में विभक्त थे।[5] मेव, मीणा और भील

जैसे आदिवासियों की बस्तियों के साथ इस क्षेत्र में सलुम्बर, चावण्ड, जवास, ओगणा, पानरवा, जूड़ा ठिकानों के आस–पास अन्य जातियों की बस्तियाँ भी विद्यमान रही थी।

पठारीय भूमि –

मेवाड़ का पठारीय भाग चित्तौड़ से बेगूं, बिजौलिया, माण्डलगढ़, जहाजपुर, भैंसरोड़गढ़ से कोटा, बूंदी राज्यों[6] की सीमा तक फैला हुआ है। यह क्षेत्र स्थानीय बोलचाल में उपरमाल[7] के नाम से जाना जाता है। यह पठार उपज की दृष्टि से मेवाड़ का सम्पन्न भाग रहा है। इस क्षेत्र में आर्थिक लाभ वाली अफीम की खेती बहुतायत से होती रही है। क्षेत्रीय सम्पन्नता से आकर्षित होकर मराठों ने भी बार–बार इसी और अतिक्रमण किए थे। परन्तु यहाँ की भूमि की स्थिति के फलतः मराठों को यातायात सम्बन्धी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

मैदानी भूमि –

उत्तर में खारी नदी से कोठारी नदी के मध्य की प्राकृतिक भूमि तथा बनास नदी से दक्षिणी वन्य प्रदेश तक फैली भूमि मेवाड़ का मैदानी प्रदेश कहलाता है। इस क्षेत्र को मेवाड़ की भाषा में 'माल' कहा जाता है। मेवाड़ की घनी आबादी वाली बस्तियाँ इसी क्षेत्र में बसीयत है। इन बस्तियों में राजपूत, ब्राह्मण तथा महाजन जातियों के साथ कृषि व्यवसायी जातियों में जाट, जणवा, डांगी, धाकड़ आदि अधिक रहते हैं।[8] यही भूमि क्षेत्र मेवाड़ की आर्थिक सम्पन्नता का भी प्रतीक था।

मेवाड़ के पहाड़ एवं नदियाँ –

मेवाड़ भू–भाग अरावली पर्वत श्रृंखला में विभाजित है, अतः इस क्षेत्र में कई संकरी घाटियाँ, नदियाँ, नाले एवं ऊँचे–ऊँचे वनोच्छादित पर्वत हैं, जिनमें वन्य जीव ग्रामीणों संग सौहार्द्रपूर्ण आश्रय पाए हुए हैं। अर्वली, आड़ावाला या अरावली पर्वत श्रृंखला अजमेर और मेरवाड़ में होती हुई दिवेर के निकट मेवाड़ में प्रवेश करती है, जहाँ समुद्रतल से 2383 फीट ऊँची पर्वत श्रेणी है; नैऋर्त्य कोण में मारवाड़ के किनारे–किनारे बढ़ती गई व कुंभलगढ़ पर इसकी ऊँचाई 3468 फीट तक पहुँच गई है एवं जरगा पहाड़ की ऊँचाई 4325 फीट है। ये पर्वत श्रेणियाँ राज्य के वायव्य कोण से लगाकर सारे पश्चिम तथा दक्षिण क्षेत्र में फैली हुई है। चित्तौड़ से देबारी तक मैदानी क्षेत्र है। दूसरी पर्वत श्रृंखला राज्य के ईशान कोण में देवली से शुरू होकर भीलवाड़ा तक चली गई है। तीसरी पर्वत श्रृंखला देवली के पास से निकलकर राज्य के पूर्व भाग में जहाजपुर, मांडलगढ़, बीजोल्यां, भैंसरोड़गढ़ व मैनाल जल–प्रपात होती हुई चित्तौड़ से दक्षिण तक गई हुई है जहाँ इसकी ऊँचाई 2000 फीट के करीब है। देबारी से लगाकर राज्य का सारा पश्चिम और दक्षिणी क्षेत्र पर्वताच्छादित पहाड़ियों से भरा पड़ा है जहाँ प्रचुर मात्रा में जल संसाधन एवं अल्प मात्रा में कृषि कार्य होते हैं।

दक्षिण–पश्चिमी बहाव वाली नदियाँ तथा पूर्वी बहाव वाली नदियाँ –

दक्षिणी पश्चिमी बहाव वाली नदियों में मेवाड़ तथा डूंगरपुर राज्य[9] की प्राकृतिक सीमा बनाने वाली सोम नदी मुख्य है। यह नदी मेवाड़ के दक्षिणी पश्चिमी भाग में बहती हुई माही नदी में विलीन हो जाती है।

दक्षिणी अरावली श्रृंखलाओं से निकल कर दक्षिण की ओर बहने वाली नदियों में गोमती, सरणी नामक नदियाँ इसकी सहायक नदियाँ रही है।[10]

पूर्वी बहाव की नदियों में मेवाड़ के उत्तरी भाग में स्थित दिवेर की पहाड़ियों से निकल देवगढ़ के पास बहती हुई खारी नदी अजमेर की सीमा पर बनास में विलीन हो जाती है। यह नदी अजमेर तथा मेवाड़ की प्राकृतिक सीमा निश्चित करने में सहायक थी। मेवाड़ के मध्य भागों को प्राकृतिक लाभ प्रदान करने वाली नदियों में कोठारी, बनास तथा बेड़च नदियाँ प्रमुख रही है। तीनों नदियाँ क्रमशः नन्दराय तथा माण्डलगढ़ के आस–पास संयुक्त होती हुई चम्बल में मिलती है। इन नदियों के तट पर राज्य के प्रसिद्ध तीर्थ व्यापारिक एवं प्रशासनिक केन्द्र रहे हैं। बनास की सहायक नदियों में चन्द्रभागा और बेड़च की सहायक नदियों में गम्भीरी तथा मेनाल प्रमुख रही है।

इस पर्वतीय प्रदेश में कई तंग घाटियाँ/नालें भी है जो यातायात की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी है। इन घाटियों में महत्वपूर्ण घाटियाँ/नाले निम्न प्रकार से है :–

1) **जीलवाड़ा की नाल** – इसे पगल्या की नाल भी कहते हैं यह अनुमानतः 4 मील लम्बी एवं बहुत संकड़ी है तथा मारवाड़ से मेवाड़ में आने का रास्ता है।

2) **देसूरी की नाल** – इसे सोमेश्वर की नाल भी कहते हैं यह भी मारवाड़ से मेवाड़ में आने की राह है यह बहुत लम्बी व विकट है।

3) **हाथीगुड़ा की नाल** – यह देसूरी से दक्षिण में 5 मील की दूरी पर है। महाराणा कुम्भा के समय में इस नाल में हाथियों का डेरा रहता था, अतः इसका नाम हाथी गुड़ा नाल हो गया। इसी नाल के ऊपर

कुंभलगढ़ का किला स्थित है एवं केलवाड़ा कस्बा भी निकट ही है इसके मुँह पर एक मोरचेबन्द फाटक है जहाँ मेवाड़ के सिपाहियों का पहरा रहता था। इस नाल में कई वीरगति पाये शहीदों के स्मारक, चबूतरे स्थित हैं।

4) **भाणपुर की नाल** – यह घाणेराव के दक्षिण में लगभग 6 मील की दूरी पर स्थित है एवं यातायात के काम आती है।

5) **केवड़ा की नाल** – यह शहर के दक्षिण में स्थित है जो जयसमंद से आगे सलूम्बर के मार्ग पर है।

6) **सांड़ोल माता की नाल** – यह मेवाड़ के पश्चिम–दक्षिण भाग में झाड़ोल के पास अत्यंत संकड़ी एवं ऊँची घाटी गुजरात मार्ग पर स्थित है। आगे सोम का घाटा भी विकट है।

7) **चीरवा घाट** – यह शहर के उत्तर–पूर्व ईशान कोण में प्रवेश द्वारा की तरह है, घाट के मध्य में विशाल दरवाजा एवं चौकी बनी हुई है।

8) **गोरम घाट** – यह मारवाड़–मेवाड़ के मध्य सुरम्य पर्वतीय घाटी है, जिसकी वर्षाकाल में छटा बहुत ही सुन्दर होती है। रेल मार्ग यही से निकाला गया है।

मेवाड़ में वर्ष भर प्रवाहित होने वाली कोई नदी नहीं है। केवल बारहमासी नदी चम्बल है।

मेवाड़ के भैंसरोड़गढ़ के समीप 9 मील क्षेत्र में प्रवाहित होती है, अतः इसे मेवाड़ की नदी नहीं कहा जा सकता। भैंसरोड़गढ़ से 3 कि.मी.

दूर चूलिया नामक स्थान पर यह 60 फीट की ऊँचाई से गिरती है, वहाँ भँवरे पड़ते हैं, बड़ा ही मनोहारी दृश्य है।

1) **बनास** – मेवाड़ की सर्वाधिक महत्वपूर्ण नदी है। इसका उद्गम बैरों के मठ – कुम्भलगढ़ में है। नाथद्वारा होते हुए बीगोद के समीप इसमें दाहिनी ओर से बेड़च एवं मेनाली नदी भी मिल जाती है एवं त्रिवेणी संगम है। वहाँ से उतर की तरफ थोड़ी दूर पर नंदराय गाँव के पास कोठारी नदी भी इसमें जा मिलती है। आगे यह जहाजपुर की पहाड़ियों में होती हुई देवली के निकट 180 मील बहने के बाद टोंक जिले में होती हुई रामेश्वर तीर्थ/ग्वालियर समीप चम्बल में मिल जाती है।

2) **बेड़च** – यह बरसाती नदी जाम्बुड़िया की नाल उदयपुर के निकट से निकल कर शहर में होती हुई उदयसागर में गिरती है और आगे नाले के रूप में 130 मील सफल करती हुई बीगोद के समीप बनास में मिल जाती है।

3) **कोटेसरी** – इसको कोठारी भी कहते है यह अर्वली पर्वतश्रेणी से निकलकर दिवेर से दक्षिण में 90 मील का सफर करती हुई नंदराय से दो मील दूर बनास में जा मिलती है।

4) **खारी** – यह मेवाड़ की नदियों में सबसे उत्तर में है। यह दिवेर की पहाड़ियों से निकल कर देवगढ़ के पास होती हुई अजमेर की सीमा पर देवली से थोड़ी दूर पर बनास में मिलती है।

5) **जाखम** – यह नदी छोड़ी सादड़ी के निकट से निकल कर प्रतापगढ़ राज्य के निकट बहती हुई मेवाड़ राज्य के धरियावद गाँव के पास सोम नदी में मिलती है।

6) **वाकल** – यह गोगुन्दा के पश्चिम से निकलत कर 50 मील दक्षिण में ओगणा व मानपुर के पास बहती हुई उत्तर–पश्चिम में कोटड़ा–छावनी होती हुई, पश्चिम दिशा की ओर बहती हुई आगे ईडर राज्य में साबरमती नदी में मिलती है।

7) **सोम** – यह बीचाबेरा के पास राज्य के नैऋत्य कोण की पहाड़ियों से निकलकर डूंगरपुर राज्य की सीमा के पास बहती हुई, साबला में माही नदी में मिल जाती है जहाँ जाखम संगम पर त्रिवेणी संगम प्रसिद्ध तीर्थस्थल बेणेश्वर धाम स्थित है।

1.1 मेवाड़ की प्रमुख झीलें –

मेवाड़ क्षेत्र में हर 10–15 वर्गमील में एक झील या तालाब अवश्य दृष्टिगोचर होता है। वैसे मेवाड़ के 50 वर्गमील क्षेत्र में प्राकृतिक एवं मानव निर्मित विशाल झीलें स्थित है जो इसे झीलों की नगरी के रूप में विश्वविख्यात बनाए हुए है। मुख्य झीलों का विवरण निम्नानुसार है –

1) पीछोला –

यह झील वि.सं. की 15वीं शताब्दी में महाराणा लाखा/लक्ष सिंह के समय एक बनजारे ने बनवाई थी ऐसी मान्यता है। इनके निकट ही पीछोली गाँव होने के कारण भी इसका नाम पीछोला पड़ा, ऐसी किंवदंती है। इसकी लम्बाई ढाई मील एवं चौड़ाई डेढ़ मील है एवं 56 वर्गमील भूमि का जल इसमें आता है। इसके पूर्व किनारे की पहाड़ी पर मेवाड़ के प्रसिद्ध राजमहल बने हुए हैं। इसके किनारे–किनारे बड़ी दूर तक कहीं एक ओर तथा कहीं दोनों ओर सुन्दर घाट, मंदिर और हवेलियाँ बनी हैं। इसक बाँध 334 गज लम्बा है जिसके ऊपर के भाग की चौड़ाई 11 गज व नीचे उससे भी अधिक है। वर्षा में जब पहाड़ी पर हरियाली छा जाती है

एवं झीलें भर जाती हैं तो शोभा कश्मीर की सी दिखने लगती है। झील के मध्य में टापुओं पर जगमन्दिर एवं जगनिवास महल बने हुए हैं जो वर्तमान में ताज ग्रुप के 'लेक पेलेस' नामक होटल के नाम से सुशोभित है। वर्तमान में नौकायन सुविधा भ्रमण एवं होटल हेतु उपलब्ध है।

2) **फतहसागर** –

शहर से उत्तर के देवाली गाँव के पास एक छोटा तालाब था जिसे बाद में महाराणा फतहसिंह द्वारा विशाल रूप देकर इसका निर्माण करवाया गया। यह झील डेढ़ मील लम्बी एवं एक मील चौड़ी है, बाँध की लम्बाई 2800 फुट है। बाँध के पास यहाँ झील की गहराई 50 फीट है। बाँध के किनारे सुन्दर छतरिया एवं मध्य में संगमरमर का महल सुशोभित है। एक छोर नाला स्थित है जहाँ से चादर गिरती है बड़ी ही नयनाभिराम झील है। इसमें नौकायन तथा उद्यान रेस्टोरेण्ट की भी सुविधा है।

3) **उदयसागर** –

यह झील उदयपुर से 6 मील पूर्व में स्थित है। इसकी लम्बाई ढ़ाई मील, चौड़ाई 2 मील है एवं 185 वर्ग मील भूमि का जल इसमें आता है। यह झील वि.सं. 1616 से 1621 ई. 5 वर्ष में महाराणा उदयसिंह द्वारा बनवाई गई। इसका बाँध 180 फुट चौड़ा है। बाँध के सामने मेडी मंगरे पर महल बने हुए हैं, झील के आस–पास शिकार हेतु ओदिया बनी हुई है। पाल पर विष्णु मन्दिर तथा किनारे पर जल निकास हेतु नाला बना हुआ है। यह झील आहाड़ की नदी एवं पीछोला–फतहसागर के नाले के पानी से भरती है।

4) बड़ी का तालाब –

यह झील शहर से करीबन 10 किमी. दूरी पर 1650–80 में महाराणा राजसिंह द्वारा निर्मित बड़ी का तालाब है। जिसका क्षेत्रफल 1.55 स्क्वायर किमी. एवं लंबाई 180 मीटर एवं गहराई 18 मीटर है। इसमें पश्चिमी पहाड़ियों का जल आता है इसका उपयोग सिंचाई हेतु होता है। बड़ी ही सुन्दर एवं प्राकृतिक झील है।

5) राजसमंद –

यह झील उदयपुर नगर से 75 किलोमीटर उत्तर में कांकरोली नामक कस्बे पर स्थित है, जो वर्तमान में राजसमंद जिला का मुख्यालय है। इस झील की लम्बाई 4 मील एवं चौड़ाई पौने दो मील है एवं 195 वर्गमील भूमि का जल इसमें आता है। गोमती नदी इसका प्रमुख जल स्त्रोत है। वर्तमान में संगमरमर खदान क्षेत्र होने से इसके पानी में कमी आ गई है एवं यह अधिकतर खाली सा ही रहता है। इसका निर्माण वि.सं. 1718 से 1732 तक महाराणा राजसिंह[11] के शासनकाल में हुआ। यह मानव निर्मित बाँध धनुषाकार में तीन मील लंबा है। 200 गज लम्बी एवं 70 गज चौड़ी इसकी पाल है एवं इस पर पाँच तोरण द्वार एवं तीन सुन्दर कलात्मक संगमरमर की छतरियाँ बनी है। जिनमें ''राज प्रशस्ति महाकाव्य'' पाषाण की 25 बड़ी–बड़ी शिलाओं पर खुदा हुआ है। नौ चौकियाँ बनी हुई है। पहाड़ी पर जैन मन्दिर एवं महल बने हुए है।

6) जयसमंद –

इसका पुराना नाम ढ़ेबर तालाब था। वि.सं. 1744 से 1748 तक महाराणा जयसिंह[12] ने लाखों रूपये खर्च करके इसका निर्माण कराया। यह झील उदयपुर शहर से 32 मील दक्षिण पूर्व में स्थित है। इसमें 9

नदियाँ एवं 99 बरसाती नाले गिरते है। इसकी अधिकतम भराव क्षमता 9 मील लम्बाई में एवं चौड़ाई 6 मील से अधिक हो जाती है। इसके भीतर तीन टापू बने हैं। जिन पर आदिवासी लोग रहते हैं। इस टापू पर बाबा मगरा रिर्सोट हाल ही में बनाया गया है। नावों द्वारा इन टापुओं पर आना–जाना होता है। इसकी पाल 1000 फीट लंबी एवं 95 फीट ऊँची है। पाल पर छः सुन्दर छतरियाँ व दो मन्दिर बने हुए हैं, किनारे पर रूठी रानी का महल एवं हवा महल बने हुए हैं। यहाँ महाराणा ग्रीष्म ऋतु में बिराजते थे, आसपास घना जंगल एवं ओदियाँ बनी हुई है जहाँ शिकार होते थे। इसकी मछली सारे भारत में नाम से बिकती है एवं जल सिंचाई एवं उदयपुर शहर की पेय सुविधा प्रदान करता है।

1.2 सिंचाई साधन एवं अन्य जल स्त्रोत –

मेवाड़ राज्य के प्रत्येक गांव में कम से कम एक तालाब या तलाई अवश्य बनी हुई थी।[13] परन्तु इसमें से अधिकांश ग्रीष्म काल में सूख जाती रही है। वर्ष पर्यन्त जलप्लावित रहने वाले सरोवरों में उदयपुर का पिछोला, स्वरूपसागर, उदयसागर, जनासागर, मदार का तालाब, फतहसागर, कांकरोली का राजसमन्द, सलूम्बर से 15 किलोमीटर उत्तर में स्थित जयसमन्द, माण्डल, कपासन, सरदारगढ़, भीण्डर, कानोड़, बड़ी सादड़ी, आवरीमाता आदि हैं। इन सरोवरों के निर्माण के पृष्ठ में व्यक्तित्व प्रतिष्ठा के साथ लोक कल्याण की भावना भी निहीत थी। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पिछोला, उदयसागर, राजसमन्द तथा जयसमन्द से सिंचाई के लिए नहरें निकाली गई। किन्तु इनका उपयोग केवल राज्य तथा सार्वजनिक बागों की सिंचाई के लिए होता था।[14]

1.3 जलवायु –

मेवाड़ राज्य का मौसम न अधिक आर्द्र और न अधिक ठण्डा रहता है। विभिन्न रिकॉर्डों के अनुसार मेवाड़ का औसतन तापमान 23°C–44°C तथा औसतन वर्षा 28 मिली. – 42 मिली. अंकित की गई है।[15]

कई अवसरों पर जलवायु में अतिवृष्टि, अतिशीत, ओलावृष्टि तथा अतिग्रीष्म द्वारा अन्न, जल तथा तृण का अभाव उत्पन्न कर जनजीवन तथा पशुओं को हानि पहुँचाई थी। मध्यकालीन वर्षों में सन् 1712–1713, 1732–34, 1747, 1755, 1764, 1783 (चालीसा काल वि.सं. 1840), 1790–1793, 1799–1800, 1804–1805, 1810–1813, 1833–1834, 1837–1838, 1860, 1868–1870 (सत्ताइसा काल), 1873, 1877–1878, 1884–1885, 1888–1889, 1890–1891 एवं 1899–1900 ईस्वी (छप्पनिया काल) के अकाल वर्ष थे।[16]

1.4 मेवाड़ की भू–राजनैतिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि –

प्राचीन समय में मेवाड़ क्षेत्र भिन्न–भिन्न समय में अलग–अलग नामों से जाना जाता है। ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दी के आस–पास इसे शिविजनपद कहा जाता था।[17] आठवीं–दसवीं शताब्दी से वाग्वट्, मेदपाट और मेवाड़ नामक तीन नामों का उल्लेख प्राप्त होता है।[18] किन्तु मेवाड़ नामक नाम सर्वाधिक प्रचलित रहा है। 19वीं शताब्दी से इस प्रदेश को उदयपुर राज्य भी कहा जाने लगा था।[19] यदि यही मेवाड़ क्षेत्र वर्तमान समय में भारतीय गणतन्त्र के राजस्थान राज्य का उदयपुर संभाग कहलाता है एवं संभाग में सम्मिलित निम्नलिखित जिले हैं – यथा उदयपुर, चित्तौड़ तथा भीलवाड़ा प्राचीन मेवाड़ राज्य के मुख्य भाग थे।

शेष दो जिले डूंगरपुर तथा बांसवाड़ा मेवाड़ क्षेत्र की भौगोलिक सीमा में नहीं आते।

सौजन्य से – प्रो. अमरेन्द्रनाथ भट्टाचार्य, देवली, उदयपुर

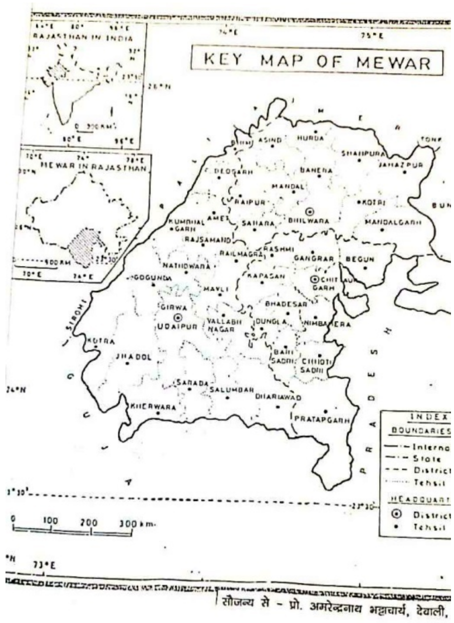

सौजन्य से – प्रो. अमरेन्द्रनाथ भट्टाचार्य, देवली,

मेवाड़ क्षेत्र का क्षेत्रफल समयान्तर होने वाले बाह्य आक्रमणों तथा राजनैतिक परिस्थितियों के दबाव के फलस्वरूप घटता–बढ़ता रहा था। शौर्यवान शासकों के इसका विस्तार उत्तर–पूर्व में बयाना, दक्षिण में रेवा और माही कांठा, पश्चिम में पालनपुर तथा दक्षिणी पूर्व में मालवा (उत्तरी मध्यप्रदेश) तक विस्तृत रहा था।

राणा अमरसिंह प्रथम के समय में ऐसी स्थिति भी उत्पन्न हो गई थी कि मेवाड़ केवल चावण्ड के पहाड़ी प्रदेश तक सीमित रह गया। किन्तु राणा संग्राम सिंह द्वितीय (1717–1734 ई.) तक मेवाड़ की सीमा पूर्ण बढ़ती रही।[20] इस समय में मेवाड़ राज्य उत्तर–पूर्व में देवली, उत्तर में नसीराबाद के पास तक, पश्चिम–उत्तर तथा पश्चिम में जोधपुर, सिरोही, पश्चिम–दक्षिण में ईडर राज्य के कुछ भाग, दक्षिण में डूंगरपुर, बांसवाड़ा व प्रतापगढ़ राज्य, दक्षिण–पूर्व और दक्षिण में भानपुरा, बुंदी, कोटा तथा उत्तर–पूर्व में जयपुर राज्य की सीमा तक फैला हुआ था। किन्तु 18वीं

सदी के पूर्वार्द्ध से मेवाड़ पर मराठों के अतिक्रमण, चौथ तथा सहायता के बदले में प्रदेश के कई गांव एवं परगने अन्य राजपूत शासकों व मराठा सरदारों द्वारा अधिकृत कर लिए जाने के कारण परिस्थिति पुनः परिवर्तित होने लगी। इस दबाव के परिणामतः घनघौर वन के साथ ही प्रदेश को भूमि की हानि उठानी पड़ी। इसका विवरण निम्न प्रकार से प्राप्त है[21] –

क) राणा जगत सिंह द्वितीय (1734–1751 ई.) के राज्यकाल में राज्य के पूर्वी–पश्चिमी भाग में स्थित रामपुरा का परगना जयपुर शासक सवाई माधवसिंह प्रथम ने मल्हार राव होल्कर को दे दिया था। यह परगना राणा संग्राम सिंह द्वितीय ने 1729 ई. में माधवसिंह को जागीर के रूप में दिया था।[22] किन्तु जयपुर के उत्तराधिकार युद्ध में होल्कर की सामरिक सहायता के बदले में 8,56,985 रू. वार्षिक आय वाला यह परगने जिसका निश्चित क्षेत्रफल ज्ञात नहीं है।

ख) राणा जगतसिंह के पौत्र राणा राजसिंह द्वितीय (1754–1761 ई.) ने चम्बल नदी के निकट स्थित वनखेड़ा, वारड़ा, हिंगलाजगढ़, जामुनिया और बुहड़ 60 लाख रूपया वार्षिक उपज वाले परगने होल्कर के रहन रखे थे। किन्तु पूर्ण राशि चुकता नहीं होने के कारण 1763 ई. में होल्कर द्वारा इन पर स्थायी अधिकार कर लिया गया। इन परगनों का कृषि उत्पादन की दृष्टि से आर्थिक महत्व था। मेवाड़ राज्य को इन परगनों के चले जाने से भूमि के साथ–साथ आर्थिक लाभ से भी वंचित होना पड़ा था।

ग) राणा अरिसिंह (1761–1773 ई.) का शासन काल मेवाड़ में गृह युद्ध तथा जागीरदार – विद्रोह का युग रहा था। राणा ने अपना पक्ष प्रबल करने के लिए कोटा के मुसाहिब झाला जालिम सिंह को

चिताखेड़ी की जागीर तथा जोधपुर के शासक महाराणा विजय सिंह को राज्य के उत्तर–पश्चिम में स्थित 80 लाख रूपया वार्षिक उत्पादन का गोरवाड़ा परगना जागीर में प्रदान किया था। जो कभी मेवाड़ में पुनः सम्मिलित नहीं किया जा सका था।

घ) राणा हम्मीर सिंह के शासन काल (1773–1778 ई.) में माधव राव सिन्धिया ने 1774 ई. में 13,725 रू. वार्षिक उत्पादन के 48 गांव बेंगू जागीर से, 31,451 रू. वार्षिक उत्पादन के 36 गांव, सिंगोली परगने से तथा 3,651 रू. वार्षिक उत्पादन के 18 गांव, भीचोर परगने से लिए थे। इसी प्रकार अहिल्या बाई होल्कर ने भी इसी काल में 10,000 रू. वार्षिक आय वाले 29 गांवों के मोरवण तथा नन्दवास नामक दो परगने के साथ निम्बाहेड़ा को चौथ की बकाया राशि के बदले में स्थाई रूप से अधिकृत कर लिया था।

ड) राणा भीमसिंह के राज्य काल (1778–1828 ई.) में सिन्धिया ने फौज खर्च के बदले राज्य के दक्षिणी–पूर्व में जावद व जीरण नामक क्षेत्र 1788 ई. में और 1800 ई. में अपनी स्व. पत्नि गंगा बाई की छतरी बनाने तथा उसकी व्यवस्था व्यय के बदले में 10 गांव वाला गंगापुर का परगना अपने ग्वालियर राज्य के अन्तर्गत ले लिया था।[23] इस प्रकार फौज खर्च के बदले में झाला जालिम सिंह द्वारा 1802 ई. में जहाजपुर का परगना मेवाड़ से अलग कर दिया गया था जो कि ब्रिटिश–मेवाड़ संधि के पश्चात् तत्कालीन पोलिटिकल एजेन्ट कर्नल टॉड ने 1819 ई. में पुनः मेवाड़ को दिलवाया था।[24]

च) राणा स्वरूप सिंह के शासन (1842–1861 ई.) काल में राज्य की उत्तरी सीमा में रहने वाली मेर और मीणा नामक उपद्रवी जातियों

की व्यवस्था और सैनिक छावनी की आवश्यकता हेतु अंग्रेज सरकार ने मेवाड़ का मेरवाड़ा क्षेत्र स्थाई रूप में अजमेर रेजिडेन्सी के अधीन कर दिया था।

1845 ई. में मेवाड़ के मेरवाड़ा क्षेत्र को अजमेर में मिलाने के पश्चात् मेवाड़ राज्य की सीमा 23.49 से 25.28 उत्तर अक्षांश और 73.1 से 75.49 पूर्व देशान्तर के मध्य फंसी हुई थी। इसका क्षेत्रफल 12,691 वर्गमील अथवा 20,304 वर्ग किलोमीटर था।[25] इस परिधि के उत्तर में अजमेर – मेरवाड़ा व शाहपुरा (फूलिया), पश्चिम में जोधपुर व सिरोही, दक्षिण – पश्चिम में ईडर, दक्षिण में डूंगरपुर, बांसवाड़ा व प्रतापगढ़ राज्य, पूर्व में नीमच, निम्बाहेड़ा तथा कोटा बूंदी राज्य, उत्तर–पूर्व में जयपुर राज्य की सीमाओं से लगी हुई थी। राज्य के 10 गांवों का गंगापुर परगने का भू–भाग सिन्धिया के ग्वालियर राज्य में और 29 गांवों का नन्दवास परगने का क्षेत्र होल्कर के इन्दौर राज्य में स्थित था।[26]

मराठा लूट–खसोट, यातायात के साधनों के अभाव तथा राज्य की स्थिति के प्रति उदासीनता के कारण इन अकालों की भंयकरता का अनुमान निम्न उदाहरणों से प्रस्तुत किया जा सकता है –

1) राणा अरिसिंह के काल में एक ओर मराठों का अतिक्रमण दूसरी तरफ मेवाड़ के जागीरदारों का उपद्रव तथा इसके साथ ही अनावृष्टि से उत्पन्न अकाल सन् 1755 तथा 1764 ई. में लोग अपनी संतानों को बेचने लगे थे लेकिन खरीददार कोई नहीं था। और स्त्रियाँ उदर पूर्ति हेतु सम्पन्न व्यक्तियों का रखैल बनकर रहने लगी थी।[27]

2) 1828 ई. में जहाजपुर परगने में अंग्रेजी प्रशासन के दबाव से तंग आकर कृषक जंगलों में चले गए, राणा जवान सिंह ने ब्रिटिश सरकार की इस स्थिति से अवगत कराया कि यह स्थिति राज्य में अकाल उत्पन्न कर सकती है। किन्तु अंग्रेजी प्रशासन ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया।[28] इसके कारण 1833–34 ई. में अकाल पड़ा। इसमें असंख्य लोग खाद्यान्न के अभाव में मर गए तथा तृणाभाव के कारण पशुओं की संख्या में कमी हुई।[29]

3) 1868 ई. की अनावृष्टि तथा 1869 ई. के अतिवृष्टि से औसतन 200 व्यक्ति प्रतिदिन मरने लगे थे। लाशों को जलाने वाला कोई नहीं था। लड़के–लड़की का क्रय मूल्य 2 रू. प्रति प्राणी था।[30]

1880 ई. में भारत सरकार द्वारा प्रथम फेमिन कोर्ट बनाया गया। जो कि देसी राज्यों में 1883 ई. के पश्चात् लागू किया गया था।[31] इसके लागू होने के पश्चात् राज्य द्वारा ब्रिटिश सरकार की सहायता से अकाल राहत कार्यक्रम चलाए जाने लगे। किन्तु इससे बेगार की समस्या बराबर बनी रही थी।

ईंधन कार्य में प्रयुक्त किए जाने वाले वृक्षों में धावड़ा खाखरा (पलाश), रंग बनाने के लिए सेमल, हड़मत, हल्दू, हिंगोटा, पलाश आदि, पत्तल–दोने बनाने के लिए खाखरा के साथ सुगन्ध एवं श्रृंगार के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले चन्दन और मेहन्दी, औषधी के लिए आंवला के पेड़–पौधे प्रकृति द्वारा ही फलते–फूलते थे।[32]

अरावली पर्वतमाला के पेटे में दबे पड़े विभिन्न प्रकार के खनिज तथा खानों ने भी प्रदेश को आर्थिक दृष्टि से प्रभावित किया था। प्राचीन काल में 19वीं सदी तक उदयपुर के दक्षिण की ओर वाली श्रृंखलाओं में

घोड़च, केवड़ा की नाल, उत्तर में देलवाड़ा तथा रेवाड़ (गंगापुर के पास) ताम्बे की खानों से ताम्बा निकाला जाता रहा था।[33] लोहे की खानों में सादड़ी, हमीरगढ़, अमरगढ़, उदयपुर के दक्षिण में स्थित वेदावत की नाल तथा लोहारिया की खान मुगल आक्रमण – काल में बन्द हो गई थी। किन्तु माण्डलगढ़ के पास वाली बिगोद, महूली, जहाजपुर के पास मनोहरपुरा और बड़ी सादड़ी के पास पारसोला नामक स्थानों पर 1836–94 ई. तक लोहा भी निकाला जाता रहा था।[34]

चांदी, सीसा और जस्ते की खानों में जावरा की खान (जावर माईन्स), दरीबा और पोटलाना प्रमुख रही थी। पोटलाना और दरीबा खान से 18वीं शताब्दी के शुरूआत तक सीसा उत्पादन होता था। जिसका वार्षिक उत्पादन मूल्य 80,000/– रू. के लगभग रहा था।[35] जावर की खान 1812–13 ई. के अकाल तक चालू थी। किन्तु मराठा, पिण्डारी अतिक्रमणों के कारण इसका उत्पादन शनै–शनै बंद हो गया। 1766 ई. के विवरण से ज्ञात होता है कि तत्काल इस खान द्वारा लगभग 2 लाख रू. वार्षिक का माल निकाला जाता था।[36] राणा शंभू सिंह के काल में अंग्रेज भूवैज्ञानिक प्रो. बुसल के निरीक्षण में इस खान की सफाई का कार्य किया गया था, किन्तु खुले बाजारों में इसके उत्पादन का अधिक लाभ नहीं देखते हुए मेवाड़ सरकार ने इसमें पूंजी लगाना व्यर्थ समझा। अतः यह कार्य बन्द कर दिया गया।[37]

पत्थर की खानों में चित्तौड़, घोसुण्डा, निम्बाहेड़ा, चांसदा, सैंती, ढीकली आदि स्थानों से मकान की छत की पट्टियाँ निकाली जाती थी। इन पत्थरों में काशिया खान और चित्तौड़ी पत्थर अच्छे माने जाते रहे हैं। ऋषभदेव (कालाजी) के आस–पास हरे पत्थरों की खानों तथा राजनगर के पास संगमरमर की खानों से उत्पादित माल का प्रयोग भी इमारतें बनवाने

में किया जाता था। मध्यकालीन इमारतों में जगविलास और खेरवाड़ा का गिरजाघर बनवाने में इन्हीं पत्थरों का उपयोग किया गया है।

देबारी तथा ढीकली से अन्न साफ करने की औखलियाँ, अनाज पिसने की घट्टियाँ (चक्की), मिर्च पीसने के सिलबट्टे के पत्थर प्राप्त होते थे। केवड़ा की नाल, राजनगर आदि स्थानों पर चूने के पत्थर की खानें विद्यमान थी। इसके पास ही चूने पकाने की भट्टियाँ[38] बनी हुई थी। जिनको वर्तमान समय में भी देखा जा सकता है।

खान–खनिज का मेवाड़ राज्य के औद्योगिक जीवन मकान निर्माण, जनजीवन में आभूषणों के प्रचलन आदि में देखा जा सकता था।[39] यह उद्योग मीणा एवं कालबेलियों के जीवन निर्वाह का मुख्य साधन था। मेवाड़ में उद्योग पतन का कारण ब्रिटिश सरकार का मेवाड़ को आर्थिक सहायता नहीं देना था, मेवाड़ सरकार का अत्यधिक विकास में रूचि रखना तथा खनिज–खपत के लिए आवश्यक स्त्रोतों का अभाव होना था इसलिए मेवाड़ प्रदेश खान–खनिज की दृष्टि से सम्पन्न होते हुए भी खनिज उद्योग में पिछड़ा रहा था।

1.5 मेवाड़ की राजधानियाँ एवं प्रशासनिक केन्द्र –

मेवाड़ क्षेत्र की परिवर्तित सीमाओं के अनुरूप क्षेत्र की राजधानियाँ भी समयानुसार बदलती रही थी। इतिहास प्रसिद्ध दुर्ग चित्तौड़ के उत्तर में डेढ़ मील दूर स्थित 'नगरी' नामक स्थान शिविजनपद की राजधानी था। जिसे मज्जिझिमिका के नाम से जाना जाता था।[40] बाप्पा रावल द्वारा शासन अधिकृत करने के समय से 13वीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशक तक एकलिंगजी, देलवाड़ा, नागदाह, चीरवा और अघाटपुर (अथवा आहड़) मेवाड़ राज्य की राजधानी और प्रशासनिक केन्द्र रहे थे।[41] 14वीं शताब्दी से 15वीं

शताब्दी तक राजधानी के केन्द्र चित्तौड़गढ़ एवं कुम्भलगढ़ थे। किन्तु 16वीं सदी के मध्य में मुगल शासक अकबर द्वारा चित्तौड़ अधिकृत किए जाने के उपरान्त तत्कालीन राणा उदयसिंह ने पिछोली नामक गांव को अपनी राजधानी बनाया था। 17वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में उदयपुर नगर के नाम से प्रसिद्ध होने लगा था।[42] राणा प्रताप (1572–1597 ई.) तथा उसके पुत्र राणा अमरसिंह प्रथम (1597–1620 ई.) ने मेवाड़ मुगल संघर्ष काल में गोगुन्दा एवं चावण्ड नामक स्थानों पर संघर्षकालीन राजधानियाँ स्थापित की। किन्तु राणा कर्ण सिंह (1620–1628 ई.) के पश्चात् से मेवाड़ राज्य के संयुक्त राजस्थान में विलय होने तक[43] उदयपुर नगर ही प्रदेश की स्थाई राजधानी रहा। वर्तमान समय में उदयपुर नगर उदयपुर संभाग का प्रमुख मुख्यालय है।

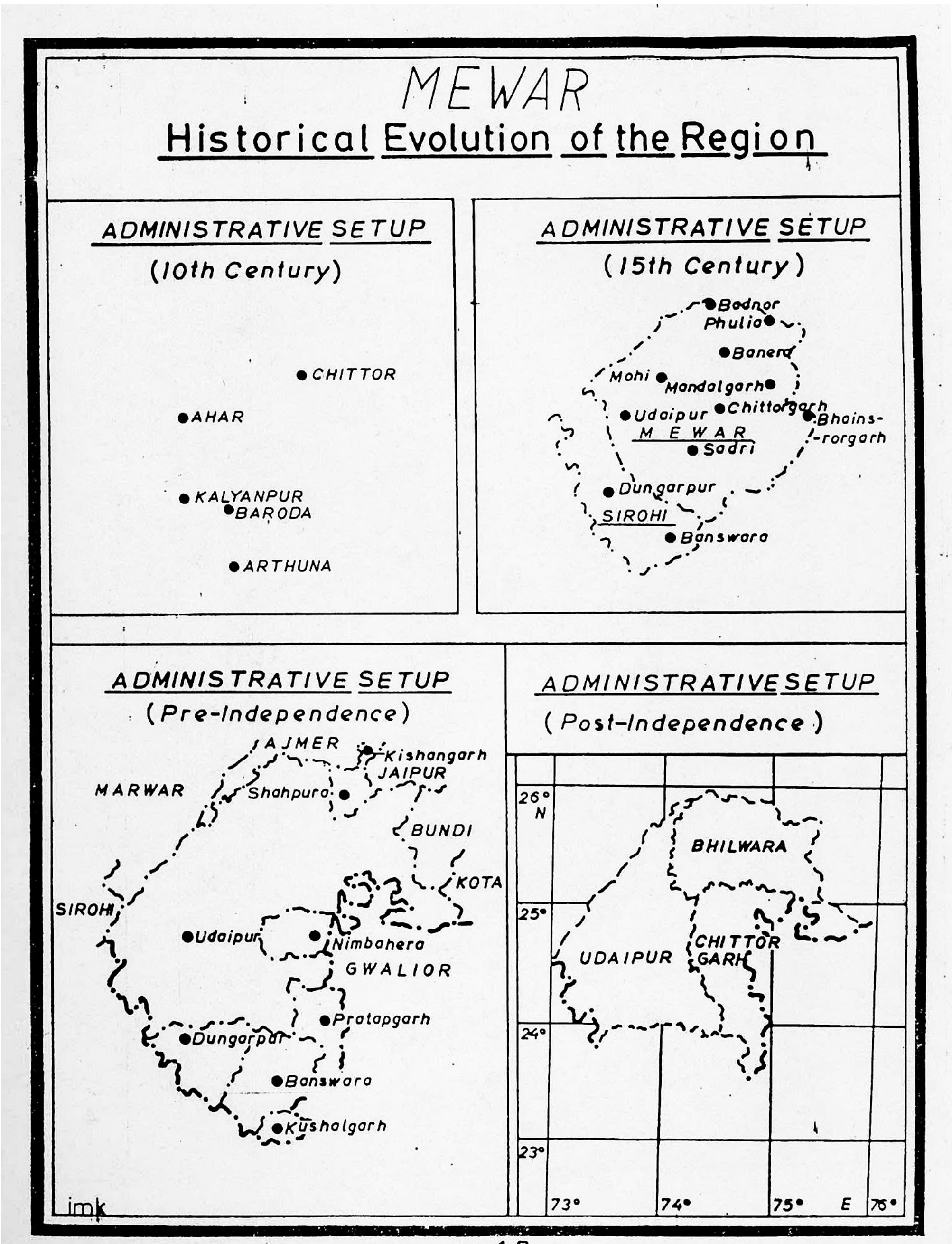

FIG. 1.7

विभिन्न प्रकार की भौगोलिकता लिए हुए मेवाड़ 16 जनपदों में विभाजित था अपने क्षेत्र की विशेषता से सम्पन्न यह जनपद निम्न अनुसार है :–

1) भीतरी गिर्वा – उदयपुर नगर परिषद् क्षेत्र करीबन 5 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र।

2) बाहरी गिर्वा – उदयपुर नगर से लगा करीबन 10–10 कि.मी. क्षेत्र गिर्वा तहसील।

3) भौमट – नगर के पश्चिम स्थित भू–भाग, पहाड़ी क्षेत्र झाड़ोल एवं गोगुन्दा तहसील।

4) झालावाड़ – झाड़ोल से आगे गुजरात से लगा क्षेत्र।

5) सैरा – कुम्भलगढ़ क्षेत्र।

6) नला – नाथद्वारा क्षेत्र।

7) सियाल पट्टी – राजसमंद रेलमगरा मैदानी क्षेत्र।

8) खैराड़ – माण्डलगढ़ भीलवाड़ा क्षेत्र।

9) उपरमाल – उत्तर–पूर्व चित्तौड़गढ़ तक का क्षेत्र।

10) मेवल – भीण्डर कानोड़ क्षेत्र।

11) छप्पनिया – सलुम्बर तहसील क्षेत्र।

12) वोराट – चारभुजा देसूरी क्षेत्र।

13) मगरा – दक्षिण में डूंगरपुर की सीमा से लगाकर पश्चिम में सिरोही की सीमा तक सारा प्रदेश पहाड़ी होने से 'मगरा' क्षेत्र कहलाता है जहाँ बहुधा भील आदि जनजातियों की बस्ती है।

14) कांठल – चित्तौड़गढ़ क्षेत्र।

15) वागड़ – दक्षिण–पश्चिम क्षेत्र खेरवाड़ा, आसपुर, डूंगरपुर क्षेत्र।

16) सिलोटी – देवगढ़ मदारिया पठारी क्षेत्र।

1.6 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि –

बापा रावल के मेवाड़ में आगमन के पहले भी यह धरा इतिहास में प्रसिद्ध रही है। इसका एक नाम मेदपाट रहा है। मेदनी अर्थात् पृथ्वी का पाट घर। प्राचीन काल में ग्रीक दिमित्रस के एक सेनानायक अपोला डोट्स ने आकर मध्यमिका नगरी पर घेरा ड़ाला जो कि मथुरा साकेत और पाटलीपुत्र की तरह महत्वपूर्ण थी। यहीं से वैष्णव धर्म में मन्दिर जैसे स्थापत्य का विकास हुआ और आंचलिक जनपदीय पंचमार्क सिक्कों की परम्परा देखने में आई। शिवियों के बाद मालव कुल व साल्व श्रेणियों के जनपद यहाँ फले–फुले।

पुरा महत्व के स्थलों में बागोर, ताम्र पाषाण स्थल आहाड़, कृषि उत्पादन का भण्डार कर्ता गिलुण्ड, लोह उत्पादक क्षेत्र ईसवाल व नठारा की पाल, कुम्हार शिल्पियों का गाँव बालाथल हैं। मेवाड़ का प्राचीन नगर मध्यमिका (नगरी) पुराने समय से ही विख्यात रहा हैं। जहाँ शिवि जनपद विद्यमान था। राजा शिवी ने यहीं कबूतर के बराबर अपना मांस काट कर बाज को खिलाया। यहाँ से भगवत धर्म, पान्चरात्र संप्रदाय का प्रचार–प्रसार हुआ। गंगोद्भव कुण्ड संभवतः शिवियों ने ही बनवाया था, बाद में गुहिल वंश मेवाड़ में आया।

मेवाड़ में जैन धर्म, बौद्ध धर्म, शैव व शाक्त संप्रदाय व सूर्य उपासक भी उस काल से प्रसिद्ध रहे। यहाँ कपड़े की कताई, बुनाई व छपाई प्रसिद्ध थी, रेशम विनीमय का केन्द्र भी मेवाड़ रहा। मध्यमिका बौद्ध धर्म के मध्यम निकाय का पर्याय भी हो सकता है।

पान्चरात्र मत में संकर्षण वासुदेव आदि चतुर्व्यूह के अंकन और पूजन की परंपरा का पल्लवन यहीं से प्रारम्भ हुआ। भगवान कृष्ण आबू पर्वत से

द्वारिका की ओर प्रस्थान करते हुए मध्य मार्ग में नगरी में ही बिराजे थे। मध्यमिका शिवि जनपद की राजधानी भी रही। शिवी राजा उदारता, करूणा और ईश्वर भक्ति के कारण उत्तम राजा था। मेवाड़ का पुराना नाम शिवि जनपद ही है। मेवाड़ में मध्य पूर्व काल में पाशुपत संप्रदाय का विकास हो चुका था। एकलिंग जी में लकुलीश मन्दिर 971 ई. में बना। पाशुपत धर्म के मन्दिर शौभागपुरा, आहाड़, कल्याणपुर, मेनाल, बिजोलिया, नान्देशमा एवं चित्तौड़गढ़ में बने हुए है। जावर, दरीबा और आगूचा में खानों के साथ देवी मन्दिर भी बने हुए हैं। इन स्थानों को गुप्त रखा गया था। नागदा में कुण्डेश्वर में सप्त मातृकाओं की मूर्तियाँ भी मिली है। चेचक से मुक्ति के लिए मेवाड़ में बहुत सारे शीतला माता के मन्दिर पुराने समय से है। मेवाड़ में उँटाला (वल्लभनगर) व कमोल गाँव एवं सागवाड़ा में शीतला माता के प्राचीनतम स्थानक बने हुए हैं।

1.7 सौर संप्रदाय –

चित्तौड़गढ़ के मौर्य शासक सूर्य पूजक थे, चित्तौड़ में सूर्य मंदिर भी बना हुआ है। रणकपुर में प्राचीन सूर्य मन्दिर बना हुआ है। ईसा पूर्व में नगरी एक औद्योगिक केन्द्र के रूप में था। मन्दसौर (श्रीमद्दश) के वस्त्र निर्माता नगरी चले आये। यहाँ बुनकर लोग कपड़ा बुनते थे। हर परिवार में कातने की परम्परा थी। घर–घर में रेटियें थे। यहाँ सालवी समाज भी बसा हुआ था। मेवाड़ लाट व दशपुर में बसे लोग रेशम का व्यापार भी करते थे। संभवतः चीन का रेशम भारत में आकर नगरी से रोम तक जाता था। नगरी की बुनाई, रंगाई एवं छपाई का सिलसिला कभी कमजोर नहीं हुआ। मेवाड़ में पूर्व काल में शिल्पी, मूर्तिकार, चित्रकार भी निवास करते थे। नगरी के वस्त्र पेशावर एवं तक्षशिला तक विख्यात थे।

मेवाड़ की सीमाऐं उपरमाल से लेकर आबू पर्वत तक व वागड़ से लेकर मेरवाड़ा तक विस्तृत थी। यह प्राकृतिक संपदा का धनी राज्य रहा। यह क्षेत्र पारियात्र और अरावली पर्वत माला के गोद में बसा हुआ है जहाँ विपुल खनिज भण्डार, उपजाऊ खेती व नदियों का जाल आज भी बिछा हुआ है। पहाड़ियों से प्राप्त होने वाले धातुओं में स्वर्ण, चाँदी, हरिताल, कसीस, सीसा, लोहा, हिंगलु, गंधक, अभ्रक, जस्ता प्रचुर मात्रा में विद्यमान था व आज भी खनन कार्य चल रहा है।

शुंगकाल में आहाड़ में यज्ञ पुष्करिणी बनी, जो आजकल गंगोद्भव कुण्ड के नाम से जाना जाता है। मालवों ने नान्दसा में यज्ञ किया और मालव सोम राजा प्रसिद्ध हुआ। गुहिलों का आगमन इस क्षेत्र में हर्ष के बाद हुआ। मेवाड़ में ही ध्रुव जी महाराज ने तपस्या की एवं नृसिंह भगवान का अवतार भी यहीं मेवाड़ में हुआ। बाल्मिकी आश्रम भी सीतामाता अभयारण में स्थित है जहाँ लव, कुश पले। रावण ने आवरगढ़ में शिव की उपासना की, पास ही बदराणा में हरि–हर अर्थात् शिव एवं विष्णु की संयुक्त मूर्ति मनोहर है। नागदा में जन्मेजय ने नाग यज्ञ किया, श्रृंगी ऋषि का आश्रम भी कुम्भलगढ़ के पास परसुराम जी में है। सीसारमा ग्राम (सीताराम ग्राम) बैद्यनाथ महादेव मंदिर सीतामाता द्वारा स्थापित है।

1.8 युग–युगीन मेवाड़ धरा –

चित्तौड़ के मौर्य शासक सूर्य पूजक थे।[44] यहाँ चित्तौड़ में सूर्य मन्दिर भी है। उनके पहले पाण्डवों की शरण स्थली भी मेवाड़ बना। बाँसवाड़ा व चित्तौड़ में पाण्डव रहे थे। रणकपुर में आज भी सूर्य मन्दिर स्थापित है। मेवाड़ के महाराणा सूर्यवंशी होने से उदयपुर में भी सूर्य मन्दिर स्थापित है। पुरा महत्व के स्थल मेवाड़ में धूलकोट, आहड़ में एक संग्रहालय भी

स्थापित हो चुका है। भक्तिमति मीराँ बाई व प्रताप के कारण मेवाड़ शक्ति एवं भक्ति की भूमि के नाम से जगत प्रसिद्ध है। पन्नाधाय का अपने पुत्र चन्दन का बलिदान विश्व में एक अनूठा उदाहरण है। चित्तौड़ के तीन साके जिनमें 55 हजार क्षत्राणियों ने धर्म रक्षार्थ जौहर स्नान कर आत्माहुति दी, मेवाड़ को विश्व प्रसिद्ध बनाया है। प्रतापी सम्राट कुंभा, जो वास्तव में भारत सम्राट कहलाये जाने चाहिए, का विचित्र युद्ध प्रेम, साहित्य प्रेम एवं संगीत प्रेम अनोखा था।

यहाँ संत मावजी, संत गवरी बाई, अष्टछाप के कवि, बावजी गुमान सिंह जी, चतुर सिंह जी एवं भुरी बाई ने इस धरा को पवित्र किया। मेवाड़ में भारतेन्दु हरीश चन्द्र, स्वामी दयानन्द सरस्वती, गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर, जयशंकर प्रसाद, अज्ञेय, करपात्री जी का आगमन हुआ व इस भूमि को नमन किया। स्वतन्त्रता संग्राम में भी यह क्षेत्र पीछे नहीं रहा – विजयसिंह पथिक, माणिक्यलाल वर्मा, गौरीशंकर उपाध्याय, मोहनलाल सुखाड़िया ने सतत संघर्ष किया। यहाँ के इतिहासकार – गौरीशंकर हीरालाल ओझा, नाथुदान महियारिया, केशर सिंह बारहठ, साहित्यकारों में लक्ष्मी कुमारी चुण्डावत, रामसिंह सोलंकी, डॉ. मोतीलाल मेनारिया, डॉ. प्रकाश आतुर, पं. विश्वेश्वर शर्मा, डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', नन्द चतुर्वेदी ने भी प्रसिद्धी प्राप्त की। यहाँ कई पद्म विभुषण प्राप्त व्यक्तियों के कारण यह मेवाड़ प्रसिद्ध रहा। यहाँ के संगीतकार, नृत्यकारों ने इस क्षेत्र का नाम रोशन किया, यहाँ का निवासी सीधा–साधा, भला आदमी रहा और त्याग, बलिदान में सदैव ही अग्रणी रहा। इतिहास प्रसिद्ध हाड़ी रानी, गोरा–बादल, जयमल–पत्ता, कल्ला राठौड़ आदि ने अपनी बलि देकर इसका गौरव बढ़ाया।

1.9 मेवाड़ का राजवंश –

मेवाड़ का राजवंश गुहिल/सिसोदिया कहलाता है। सीसोदा की राणा शाखा के बाद महाराणा के नजदीकी सरदार राणावत कहलाये। चुण्डावतों के मेवाड़ में सबसे अधिक ठिकाने है और हो भी क्यों नहीं, चुण्डा तो मेवाड़ का भीष्म पितामह है। वह तो रघुकुल वंश में दूसरा भरत है। सारंगदेवोत चुण्डा के भाई की शाखा, वीरमदेवोत एवं शक्तावत प्रताप के भाइयों की शाखा एवं पूरावत प्रताप के पुत्र पूरा जी के नाम की शाखा है; और भी अनेक शाखाऐं है। चन्द्रावत, भाखरोत एवं कीतावत आदि।[45]

रघुवंश सिरमौर मेवाड़ का गुहिल वंश न केवल मेवाड़ में ही वरन् सारे भारत वर्ष में छाया रहा। विश्व में एक मात्र हिन्दु राष्ट्र नेपाल का वंश मेवाड़ से ही गया। महाराणा रतनसिंह का छोटा भाई कुम्भकर्ण मेवाड़ से कुमाऊ होता हुआ पाल्या में राज्य स्थापित कर नेपाल का राजा बना और शाह कहलाया। पृथ्वी नारायण शाह ने नेपाल जीता। इसी प्रकार मुगलों से टक्कर लेने वाला हिन्दुपत पादशाह शिवाजी का जग प्रसिद्ध वंश भी मेवाड़ से ही गया एवं सीसोद वंश ही है। राणा लक्ष्मण सिंह के पुत्र अजय सिंह ने अपने दोनों पुत्रों, सज्जन सिंह और क्षेम सिंह को मुंजा नाम के बालेचा का सिर काट कर नहीं ला पाने के कारण मेवाड़ छोड़ने को कहा। वे मेवाड़ छोड़कर दक्षिण की ओर चल दिये। इन्हीं के वंशज राणा भैरव सिंह (भौंसला) हुए जिन्होंने मुधोल पर अधिकार किया, इन्हीं भौंसले के वंश में उग्रसेन हुए जिनके दो पुत्र कर्णसिंह एवं शुभकर्ण हुए, कर्ण के वंशज घोरपड़े कहलाये एवं शुभकर्ण के वंशज में शिवाजी हुए। इस प्रकार महाराष्ट्र में मुधोल (भौंसले) रायबाग बैन के (घोरपड़े) शुभकर्ण के वंश में कोल्हापुर में शिवाजी तथा सावन्त वाड़ी में सोम सामन्त कहलाये। ऐसे ही

नागपुर एवं बराट में तथा मद्रास प्रांत में तंजौर एवं विजीयागर में शिवाजी के भाई बेका जी एवं सया जी ने राज्य स्थापित किए।

मेवाड़ के गुहिल वंश ने मध्य प्रदेश में बड़वानी, अली राजपुर, आवासगढ़ एवं रामपुरा में राज्य स्थापित किए। गुजरात सौराष्ट्र (बल्लभी), भावनगर, पालीताणा, लाठी एवं राजपीपला में गुहिल वंश का राज था। मारवाड़ में खेड़, वीजापुर, नाणा, बैड़ा एवं झालामण्ड ठिकाने सिसोदियों के हैं। अजमेर में सावर पिपलाज तथा मध्य प्रदेश में अनेक शक्तावतों व चुण्डावतों के ठिकाने हैं।

मेवाड़ का गहलोत वंश न केवल राजस्थान में ही नहीं वरन् सारे हिन्दुस्तान व उसके बाहर भी फैला हुआ है। इस वंश की शाखाऐं उदयपुर, प्रतापगढ़, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, शाहपुरा, भावनगर, लाठी, राजपीपला, बड़वानी, धर्मपुर, नेपाल, अली राजपुर, विजयनगर आदि स्थानों पर फैली हुई है। इनके अनेक नाम इतिहास में प्रसिद्ध है। गहलोत, चुण्डावत, सांगावत, सारंगदेवोत, शक्तावत, चन्द्रावत, राणावत, भाणावत, भौंसले, मधोल, मांगलिया, लुणावत, पीपाड़ा, केलपुरा (केलवा), भटेवरा, गोहिल, गौरखा, खुसा, थापा, रूद्रोत, भाखरोत, बाछल, दोवड़, तोड़ा, रंगिया, गौधड़ा, बगरोचा, गटचा, जोरा, ओजाइड़ा, गौतमा, मंगरोपा आदि अनेक शाखा प्रशाखाऐं हैं।

मेवाड़ के सूर्यवंशी महाराणा का गौत्र वैजपायन है, वैद युजर्वेद, शाखा माध्यन्दिनी, इष्टदेव एकलिंग नाथ, कुलदेवी बायणमाता, ऋषि हारित, झण्डा पंचरंगा, राजधानी अयोध्या, शाखाऐं रावल एवं राणा, गुरू वशिष्ठ; उप वेद धनुर्वेद, सूत्र कात्यायन शिखा दाहिनी, पद दाहिनी, वृक्ष वटवृक्ष, निशान रणजोत; नदी सरयू, नंगाड़ा वैरीशाल, निकास श्री वस्ती,

आदि पुरूष – विष्णु; बाजा – रण कांकण, सिंहासन बापा रावल का, डेग भुंजाई, घोड़ा चेटक, ढ़ोल बारू, कटार मुगलाई, गढ़ चित्तौड़गढ़, वाक्य – जो दृढ़ राखे धर्म ने, तेही राखे करतार, राज्य चिन्ह – एक तरफ क्षत्रिय, दूसरी तरफ भीलू राणा, बीच में चित्तौड़गढ़, विभूतियाँ – क्षत्रिय कुल कमल दिवाकर, हिन्दुआ सूरज, हिन्दुपत, राजगुरू, अन्नम, शिश वस्त्र – पाग, चारणी माता, आँवरी माता, पूजा – खेजड़ी पूजन एवं खड़ग पूजन, नृत्य – गूमर, सवारी गणगौर की, वाद्य यन्त्र – बांक्यो, तोरण पर बोर की ड़ाली; द्वितीय मातेश्वरी – नागणेच्या माता, ओख – अष्टमी की पूजा, वर्जित वस्त्र – अधरंग नहीं पहनते हैं, गर्व – दिल्ली दरबार में नहीं जाना, धाय माँ – गुजरी, प्रधाना – महाजन का, वर्गीकरण – 16 उमराव, 32 सरदार, गोल के सरदार, 17वाँ उमराव – मुसलमान।

मेवाड़ को वीर भूमि बनाने का श्रेय केवल क्षत्रिय जाति को ही नहीं, और जाति के लोगों ने भी अनुठे उदाहरण पेश किये हैं। सर्वप्रथम हारित ऋषि तथा वह ब्राह्मण परिवार जिसने गुहिल एवं बापा का पालन पोषण किया। शक्ति सिंह एवं प्रताप के बीच युद्ध को कटार खा कर बचाने वाला ब्राह्मण परिवार, यहाँ का कुल गुरू एकलिंग जी के गुसाई जी, कथा भट्ट, ज्योतिषी परिवार, पुरोहित, राज्य वैद्य, चारों धामों के गुसाई महाराज खड़ग स्थापना में बैठने वाले सवीनाखेड़ा के गुसाई और मॉडल के नाथ पंथी साधु। मेवाड़ में ब्राह्मणों की वहीं इज्जत थी जो राजा राम के समय में गुरू वशिष्ठ जी की थी। गुजरों में पन्ना धाय, चारणों में बरबड़ी जी, महाजनों में चील मेहता, आशा शाह देवपुरा, भामाशाह एवं उनका भाई, मेवाड़ में प्रधाना अधिकतर महाजनों के हाथों में ही रहा और यही व्यवस्था छोटे रूप में सभी ठिकानों में भी कायम रही।

इसी प्रकार और जातियों के प्रसिद्ध घराने भी कालजयी हो गये। उनमें प्रसिद्ध हैं भामाशाह व उनके भाई ताराचन्द का घराना, सिंघवी दयाल दास का घराना, पंचोली बिहारी दास का घराना, बड़वा अमर चन्द का घराना, मेहता अगर चन्द का घराना, मेहता राम सिंह का घराना, सेठ जोरावर मल बापना का घराना, पुरोहित राम जी का घराना, कोठारी केसरी सिंह का घराना, कविराज श्यामल दास का घराना, सहीवाले अर्जुन सिंह का घराना, मेहता भोपाल सिंह का घराना आदि अनेक घराने, मेवाड़ के महाराणाओं की पृथक–पृथक समय में सेवा करते रहे, तभी विश्व में 1400 वर्षों तक मेवाड़ पर महाराणाओं का एक छत्र राज्य कायम रहा।

1.10 भारत में गुहिलोत वंश का विस्तार[46] –

1) **नेपाल का गोरखा वंश** – बापा रावल के वंशज, हमीरगढ़ से राणा हमीर के तीन भाई निकले एक ने कोपाचिट परगने में करचूनिया राज्य बनाया, दूसरा नेपाल गया और गौरखपल्ली पर अधिकार कर बूखल को राजधानी बनाया व तीसरा बंगाल में गया नेपाल की वंशावली पूर्व में दी जा चुकी है। गोरखा की खुसा एवं थापा शाखाऐं हैं। सुमेरसिंह चित्तौड़ के पुत्र कुंभकर्ण कुमायूँ में रहे, इन्हीं के वंशज पृथ्वी नारायण शाह ने वि.सं. 1828 में नेपाल क्षेत्र पर अधिकार कर काठमाण्डू को अपनी राजधानी बनाई।

2) **हिमाचल प्रदेश में** – जमराल, बलवान, बजियाल, रसियाल एवं बालछ क्षेत्र में।

3) **गुजरात में** – सौराष्ट्र, भावनगर, पालीताणा, लाठी, राज पीपला, वला, धरमपुर, राणा कर्णसिंह के पुत्र राहप के वंशज रामशाह ने

नया परगना बना रामनगर बसाया। उसके वंशज रामदेव व धरमदेव हुए उन्होंने धरमपुर बसाया।

4) **मध्य प्रदेश में** – धनुक गुहिलोत का 20वां वंशधर मालसिंह हुआ। उसके वंशज बडवानी के शासक हुए। अलीराजपुरा, आवासगढ़ एवं रामपुर में सीसोदा के राणा के वंशज भीमसिंह के पुत्र चन्द्रसिंह के वंशज चन्द्रावत कहलाते हैं।

5) **बिहार में** – देवगढ़ से गुहिलोत बिहार, गया पहुँच गए वहाँ मडियार राज्य स्थापित कर मडियार कहलाने लगे।

6) **महाराष्ट्र में** – मुधोल – राणा लक्ष्मण सिंह के 8वें पुत्र अजयसिंह के दो पुत्र सज्जनसिंह व क्षेमसिंह मेवाड़ छोड़कर चले गये। इनके पुत्र दिलीपसिंह को 10 गाँव ब्रह्मनी में जफरावा/दसनगंगू ने दिये। इनके सिद्धजीव व भैरवसिंह हुए एवं भौंसले कहलाए। इनके वंश में शुभकर्ण के छत्रपति शिवाजी हुए व कर्णसिंह के पुत्र भीमसिंह को सुल्तान ने "राजा घोरपड़े बहादुर" की उपाधि प्रदान की, इनके वंशज मालोजी को विजयपुर के निकट 30 गाँव कर्नाटक में मिले। कोल्हापुर – ताराबाई अपने पुत्र शंभा व शिवा को लेकर कोल्हापुर चली गई व शिवाजी द्वितीय कोल्हापुर का शासक बना।

7) **सावंतवाड़ी** – भौंसले फोड़ सावंत के पुत्र खेम सावंत ने दक्षिण में स्वतन्त्र राज्य स्थापित किया। यहाँ के शासक सर देसाई कहलाते हैं।

8) **नागपुर** – शिवाजी के परदादा के भाई परसोजी के पुत्र सुधोजी निजामशाही में नौकर थे, इनके पुत्र कानोजी ने गौड़ों पर अधिकार

किया और नागपुर के पास अपनी राजधानी बनाई। **रायबाग** – भीमसिंह के वंशज है तथा बरार में राघो जी के वंशज हैं।

9) **तमिलनाडु में** – तंजोर में भौंसलों का राज्य था। शिवाजी के भाई बेकाजी ने इसे अधिकार में लिया उनके वंशज बादशाह जी, शरफजी, तुकोजी, येकोजी व सयाजी हुए। विजयनगर में भी शिवाजी के भाई बेकाजी के वंशज विजय राम राज का राज्य रहा।

1.11 मेवाड़ के गुहिल/सिसोदिया वंशज के अन्य राज्य –

1) **डूंगरपुर** – मेवाड़ के रावल सामंतसिंह के कितू चौहान ने राज्य छीना व इनके पुत्र जयंतसिंह ने बागड़ पर अधिकार किया। इनकी 7वीं पीढ़ी में भूचण्ड हुए उनके पुत्र डूंगरसिंह ने डूंगरपुर बसाया।

2) **बाँसवाड़ा** – आहड़िया गुहिलोतों की दूसरी रियासत बाँसवाड़ा हुई। डूंगरपुर महरावल के दो पुत्र पृथ्वीराज व जगमाल थे। वि.सं. 1577 में पृथ्वीराज को डूंगरपुर व जगमाल को बाँसवाड़ा दिया।

3) **प्रतापगढ़** – राणा मोकल के पुत्र खेमकर्ण को राणा कुंभा ने आनाकानी की तो उन्होंने बड़ी सादड़ी पर अधिकार किया। इनके पुत्र सूर्यमल व रायमल हुए जिनकी आपस में नहीं बनी। गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया। सूर्यमल पुत्र बाघसिंह पाण्डल पोल पर युद्ध में काम आये व इस घटना के बाद प्रतापगढ़ के महारावल देवलिय दीवान कहलाये, आगे चलकर प्रतापसिंह ने प्रतापगढ़ बसाया।

4) **शाहपुरा राज्य** – मेवाड़ महाराणा अमरसिंह प्रथम के पुत्र पूरणमल को खैराड़ की जागीर मिली। उसके तीन पुत्र सुजानसिंह, भावसिंह

व वीरमदेव हुए। भावसिंह को नालेरा, वीरमदेव शाहजहा की सेवा में चले गये, महाराणा जगतसिंह प्रथम से नाराज होकर बड़ा भाई सुजानसिंह भी शाहजहा के पास चले गये। शाहजहा ने 1688 में फूलिये का परगना दिया जहाँ इन्होंने शाहजहा के नाम से शाहपुरा बसाया।

सुदुर पूर्व – इतिहासकारों ने बड़ौदा नरेश के समक्ष एक रिसर्च पेपर प्रस्तुत किया जिसमें जापान का सम्राट भी रघुवंश का बताया गया है। कुछ मैत्रेय वंशी जावा, सुमात्रा, बोरनिया, मलेसिया, इण्डोनेसिया, मलयद्वीप में जा बसे और वहाँ अपना राज्य वंश चलाया। भगवान बुद्ध, महावीर एवं 24 तीर्थंकर क्षत्रिय वंश के ही थे।

कर्नल जेम्स टॉड के अनुसार मेवाड़ राजवंश[47] निम्न नामों से जाना जाता है –

1) गुहिलोत, 2) असिल (बापा के सन्तान असील बापावत का सौराष्ट्र में आलीसगढ़ है), 3) मांगलिया (खुमाण के पुत्र से), 4) भटनेरा (भर्तभट के वंश से), 5) अहड़िया (आहिड़ राजधानी से), 6) चन्द्रावत (भीमसिंह के पुत्र चन्द्र से), 7) सीसोदिया (माहप, राहप के सिसोदे से), 8) पीपाड़ा, 9) अजबरिया, 10) कुडेचा, 11) धोराणा, 12) भीमला, 13) हुल, 14) गोधा, 15) सोहाड़िया, 16) कोठ्करा, 17) आसरेचा, 18) नादोड़या, 19) ओड़लिया, 20) पालरा, 21) कुचेरा, 22) बुसा, 23) केलवा, 24) मंगरोपा, 25) दुवासा, 26) मुधरायता, 27) आसायच, 28) डाहलिया, 29) मोटसिरा, 30) गोदारा, 31) मोर, 32) टीवाणा, 33) माहिल, 34) तिबड़किया, 35) बूढ़ीबला, 36) बूंटिया, 37) गोतमा, 38) आवा, 39) खेरूज्या, 40) करथ, 41) आलू, 42) जोरा, 43) ओवाइड़ा, 44) धुढ़्या, 45) बोवा, 46) पाहा

उदल, 47) भारज्या, 48) परथीराज गेलोत, 49) आसकरण गेलोत, 50) ताहड़ गेलोत, 51) भड़ेचा, 52) नाज्या, 53) ओजाकर, 54) गटका, 55) गोहल – रावल बापा के पाँच पुत्रों की सन्तान। गोहलवाड़ा इस शाखा का है, भावनगर लाठी व पालीताणा इनके नगर है लाठिया गोहिल, उनी गोहिल, गोचर गोहिल, 56) मूंदोत, 57) दौवड़, 58) बील्याजक, 59) तोड़ा, 60) दुदेसिया, 61) सादवा, 62) रंगिया, 63) पानसिया, 64) बाणगोधा, 65) गोधड़ा, 66) केत गोयल, 67) बगरोया, 68) कूंपा, 69) धोरणिया, 70) नादोत, 71) सोब, 72) बोढ़ा, 73) कोढ़ा, 74) करा, 75) धालरिया, 76) दो संधिया (सन्दर्भ वीर विनोद से)

पाद टिप्पणियाँ –

1) आधुनिक जोधपुर संभाग

2) गोगुन्दा नामक स्थान से 25 किलोमीटर उत्तर में स्थित ये चोटी समुद्र तल से 4315 फीट ऊँची है।

3) जंगल के सुखे वृक्षों व घास को जला कर खाद बनाना तथा इसी में बीज छिटक कर वर्षा में उगने देना, को वासरा (या वत्सर) खेती कहा जाता रहा है, उदयपुर इतिहास, भाग 2, पृ. 9, गहलोत – राजस्थान इतिहास, पृ. 135

4) दृष्टव्य – खान एवं खनिज अनुच्छेद।

5) उदयपुर के आस–पास वाला क्षेत्र मगरा, वाकल नदी के पास वाला भोमट और गोमती नदी के पूर्वी भाग में मेवल तथा गोमती से माही नदी के मध्य का क्षेत्र छप्पन कहलाता रहा है।

6) आधुनिक कोटा सम्भाग की पश्चिमी सीमा।

7) माल मैदान तथा ऊपर पहाड़ी भाग।

8) कैप्टन सी. ई. यटे, गजेटियर ऑफ मेवाड़, भाग 3, पृ. 44

9) आधुनिक डूंगरपुर जिला

10) मेवाड़ रेजिडेन्सी, भाग 2, पृ. 8, उदयपुर इतिहास, भाग 2, पृ. 4–5

11) Let. Conl. Pintey A.F. (Regident of Mewar 1900–1906 A.D.), History of Mewar, Appendix K, Page XXXV

12) Let. Conl. Pintey A.F. (Regident of Mewar 1900–1906 A.D.), History of Mewar, Appendix K, Page XXXVI

13) याटे, मेवाड़ भाग 3, पृ. 18

14) सन् 1884 ई. में राज्य में प्रथम सिंचाई नहर राजसमन्द से निकाली गई। एडमिनिस्ट्रेटीव रिपोर्ट ऑफ मेवाड़ स्टेट, सन् 1884–85, 1887–88, 1890–91, गहलोत, राजस्थान इतिहास, पृ. 133

15) मेवाड़ प्रदेश में सर्वाधिक ठण्डक जनवरी माह (59–61 4 न्यून तापमान) में, गर्मी मई माह (89–89 6 अधिक तापमान) में तथा अधिक वर्षा जुलाई–अगस्त माह (10–85–7) रहती है – उपरोक्त, मेवाड़ रेजिडेन्सी, पृ. 11

16) एनाल्स, भाग 1, पृ. 437–497

17) डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द औझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग 1, पृ. 1

18) उपरोक्त, पृ. 1, जगदीश सिंह गहलोत, राजपुताने का इतिहास, पृ. 130, डॉ. चन्द्रशेखर पुरोहित, संस्कृत साहित्य का मेवाड़ को योगदान (अ.प्र.शो.), पृ. 5

19) मेवाड़ रेजिडेन्सी तथा एजेन्सी रिकॉर्ड में इसे उदयपुर राज्य कहा जाता था।

20) डॉ. गोपीनाथ शर्मा, मेवाड़–मुगल सम्बन्ध (हिन्दी), पृ. 1

21) इस विवरण के आधार हेतु ग्रंथ दृष्टव्य – अ) कर्नल टॉड – एनाल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान, भाग 1, ब) ब्रुक्स –

हिस्ट्री ऑफ मेवाड़, स) कविराजा श्यामलदास – वीर विनोद, भाग 1–4, द) पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा – उदयपुर राज्य का इतिहास, य) डॉ. के.एस. गुप्ता – मेवाड़ एवं मराठा रिलेशन्स, र) डॉ. आर. पी. शास्त्री – झाला जालिम सिंह

22) माधव सिंह, राणा जगतसिंह द्वितीय का दोहिता तथा सवाई जयसिंह का द्वितीय पुत्र था। राणा संग्राम सिंह ने रामपुरा का परगना अपने भाणेज के रोटी खर्च हेतु जागीर में दिया था, पृ. 980, 1241

23) एनाल्स भाग 1, पृ. 505, वरदा वर्ण 18, अंक 2, पृ. 1–11

24) डॉ. मथुरा लाल शर्मा, कोटा राज्य का इतिहास, भाग 2, पृ. 505

25) मेजर ई. डी. ...., मेवाड़ रेजिडेन्सी, भाग 2, पृ. 5, गहलोत, राजस्थान इतिहास, पृ. 130

26) वी. वि., पृ. 100–101, औझा, उदयपुर इतिहास, भाग 1, पृ. 2

27) एस. एस. श्रीवास्तव, उपरोक्त

28) राणा जवानसिंह का एजेन्ट टू गवर्नर जनरल – फॉरेन – पॉलिटिकल कन्सलटेशन – 2 मई, 9 मई 1828, भाग 1–2

29) रिपोर्ट ऑफ दी फेमिन इन नेटिव स्टेट्स ऑफ राजपूताना, 1899–1900 ई., पृ. 9

30) रिपोर्ट ऑफ दी पॉलिटिकल एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ राजपूताना फॉर, 1868–1869 ई., पृ. 15, मेवाड़ एजेन्सी रिपोर्ट, 1869, पृ. 49–50, वी. वी. पृ. 2083–2084

31) एल. पी. माथुर – रिपन, पृ. 136

32) मेवाड़ रेजिडेन्सी, उपरोक्त, सेन्सेज ऑफ इण्डिया, 1961, खण्ड 14, राजस्थान भाग 6 (वी.सी.डी.) धावड़ा का तना डेंगचा व घोड़ी बनाने के काम में लिया जाता रहा है। जो कि मकान की छवाई के काम आता है।

33) वी. वी., पृ. 179, मेवाड़ रेजीडेन्सी, पृ. 53

34) वी. वी., उपरोक्त

35) मेवाड़ रेजिडेन्सी, पृ. 53, श्यामलदास में इसकी आय 2 लाख रूपया वार्षिक लिखी है। (वी. वी., पृ. 178) जो कि मूल में राज्य के खालसा क्षेत्राधीन खानों की वार्षिक आय रही थी।

36) मेवाड़ रेजिडेन्सी, उपरोक्त

37) यटे लिखते हैं कि राणा की अरूचि के कारण कार्य स्थगित कर दिया था। यटे – मेवाड़, पृ. 12, किन्तु इसका मूल कारण उत्पादन की मात्रा का अधिक लाभ नहीं होना था। (वी. वी., पृ. 179) इसकी खुदाई में 15,000/– रूपया मेवाड़ सरकार ने खर्च किया था। (मेवाड़ रेजिडेन्सी, पृ. 53)

38) धातु सफाई करने का कार्य 'धरिया' तथा मिट्टी की .... किया जाता था।

39) दृष्टव्य आवास–निवास, रहन–सहन, प्रकरण।

40) डॉ. प्रभुदयाल अग्निहोत्री, पतांजली कालीन भारत, पृ. 97–98

41) रावल जैत्रसिंह (1213–1250 ई.) के समय में मेवाड़ की राजधानी नागदृह (अथवा नागदा) थी, परन्तु सुल्तान इल्तुतमीश के आक्रमण

के कारण यह नष्ट हो गई थी। अतः रावल द्वारा अघाटपुर में नवीन राजधानी का निर्माण किया गया था। उसके पूर्व रावल तेजसिंह (1250–1272 ई.) के काल में चित्तौड़ के सामरिक महत्व को देखते हुए राजधानी को परिवर्तित कर चित्तौड़ ले जाया गया था।

42) सुल्तान अल्लाउद्दीन के चित्तौड़ आक्रमण 1302–1303 ई. के समय मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़ ही थी। राणा कुम्भा 1433–1468 ई. द्वारा कुम्भलगढ़, राणा सांगा 1509–1528 ई. द्वारा चित्तौड़ व राणा उदयसिंह 1540–1572 ई. में उदयपुर को राज्य की राजधानी बनाया था।

43) 18 अप्रेल, 1948 ई. को राणा भूपालसिंह द्वारा मेवाड़ राज्य का विलय संयुक्त राजस्थान में होना स्वीकार किया था।

44) राठौड़, डॉ. औंकार सिंह; मेवाड़ की अनूठी संस्कृति, संत गोपालदास निर्वाणी, पृ. 16–19

45) उपरोक्त, वही, पृ. 39–53

46) उपरोक्त, वही

47) उपरोक्त, वही